# प्रकार्यवाद (Functionalism)

प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के इतिहास में एक प्रमुख संप्रदाय है जिसकी स्थापना संरचनावाद के विरोध में हुआ। प्रकार्यवाद द्वारा चेतन तथा व्यवहार की उपयोगिताओं के अध्ययन पर बल डाला गया है। इसके जन्म के पीछे कई कारण महत्वपूर्ण माने जाते हैं, जिसे मनोवैज्ञानिकों ने दो वर्गों में विभाजित किया है —

- # विकासात्मक सिद्धान्त
- # विलियम जेम्स का मनोविज्ञान

# विकासात्मक सिद्धान्त — स्पेंसर, डार्विन, तथा गाल्टन ये तीनों मुख्य विकासात्मक स्रोत माने गए हैं, जिससे प्रकार्यवाद के स्कूल की उत्पत्ति काफी प्रभावित हुई है। स्पेंसर के लिए विकास से तात्पर्य अस्पष्ट एकरूपता से स्पष्ट विभिन्नता में परिवर्तन से होता है जिसमें संगठन तथा विभेदीकरण की सतत प्रक्रियाएं सम्मिलित होती हैं। ऐसे परिवर्तनों द्वारा प्राणी उत्पन्न बाह्य वातावरण के साथ समायोजन करने की कोशिश करता है। विकासात्मक सीढ़ी में प्राणी जितना ही ऊँचा होता है उनकी अनुक्रियाएँ उतनी ही जटिल एवं भिन्न होती हैं। साधारण अनुक्रियाएँ जन्मजाती होती हैं और पर्यावरण के साथ संपूर्ण समायोजन की ओर इशारा करती हैं। इन्हे प्रतिवर्त (reflexes) कहा जाता है। विकासात्मक सीढ़ी के उच्चतर पशु अधिक जटिल प्रतिवर्त क्रियाएँ करते हैं, जिसे मूलप्रवृति (Instinct) कहा जाता है। इस मान्यता द्वारा जैविक समस्याओं का मनोविज्ञान के क्षेत्र में अंतरण होता है और स्पेंसर का मनोविज्ञान एक तरह से प्रथम 'प्रकार्यवादी मनोविज्ञान' की भूमिका में आ जाता है।

चार्ल्स डार्विन दूसरे ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके विचारों से प्रकार्यवाद काफी प्रभावित हुआ है। डार्विन ने कहा है कि अस्तित्व के लिए संघर्ष ही जिंदगी है। उत्तम ढंग से समायोजित प्राणी ही को जीवित रहने की संभावना अधिक होती है तथा स्वाभाविक चयन के माध्यम से ऐसे ही प्राणी प्रजनन में सक्षम होते हैं। डार्विन ने यह बात भी व्यक्त किया कि समायोजन एवं

अनुकूलन की पूरी प्रक्रिया का संबंध मनोवैज्ञानिक एवं दैहिक प्रकार्यों से होता है क्योंकि मन का विकास शरीर के साथ-साथ ही होता है। डार्विन ने संवेग को भी जैविक रूप से लाभदायक प्रकार्य माना है। डार्विन के सिद्धान्त से पशुओं तथा मनुष्यों के बीच निरंतरता स्थापित करने में मदद मिलती है और प्रकार्यवादी मनोविज्ञान को बल मिलता है।

सर फ्रांसिस गाल्टन ने मनुष्यों में आनुवंशिक कारकों की अहम भूमिका को स्वीकार किया। वैयक्तिक भिन्नता के अध्ययन पर भी गाल्टन ने अधिक बल डाला और बुद्धि के क्षेत्र में वैयक्तिक विभिन्नता का भी अध्ययन किया जिससे मनोविज्ञान में उपयोगितावादी विचारधारा को बल मिला और मानसिक क्षमताओं के विकास के अध्ययन को प्रोत्साहन। वे आनुवंशिकी की समस्याओं के अध्ययन के लिए सांख्यिकीय विधियों का भी प्रतिपादन किये। इस तरह उपयोगितावादी विचारों का प्रकार्यवाद के नींव पर गहरा प्रभाव पड़ा।

## # विलियम जेम्स का मनोविज्ञान —

इतिहासकारों का मत है कि विलियम जेम्स ने एक संप्रदाय के रूप में प्रकार्यवाद की संस्थापना अपनी पुस्तक 'Principles of Psychology', 1980 में कर चुके थे। जेम्स का मत था कि व्यक्ति के व्यवहार अनुकूली होते हैं और मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रहने के लिए प्राणी को अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करना आवश्यक है। उनका यही विचार प्रकार्यवाद के लिए सारतत्व बन गया। इस तरह के अनुकूलन में मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं दोनों की भूमिका होती है। जेम्स का यह भी मत था कि चेतन विकास का ही परिणाम होता है। एक उपयोगितावादी के रूप में वे इस तथ्य पर बल डाले कि किसी ज्ञान की वैधीकरण उसके परिणामों के रूप में किया जाना चाहिए। प्रकार्यवादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा जेम्स के उपयोगितावाद को अपने मनोविज्ञान में पढ़ाकर उसके कार्यक्षेत्र को विकसित किया गया।

NOTES

# शिकागो प्रकार्यवादी मनोविज्ञान
## (Chicago Functional Psychology)

प्रकार्यवाद पहला अमेरिकन मनोवैज्ञानिक स्कूल था। इस स्कूल की औपचारिक संस्थापना John Dewey तथा James Rowland Angell द्वारा 1894 में शिकागो विश्वविद्यालय में की गयी। Harvey Carr को इस स्कूल का संस्थापक नहीं बल्कि विकासक माना गया है क्योंकि इनके ही कार्य अवधि में प्रकार्यवाद अपनी लोकप्रियता हासिल कर पाया। बाद में रॉबर्ट सेशन्स वुडवर्थ द्वारा इस स्कूल के विचारधाराओं को कोलम्बिया विश्वविद्यालय में लाकर प्रभावी बनाया गया। उनके इस संप्रदाय का नाम गत्यात्मक मनोविज्ञान था।

प्रकार्यवादी मनोविज्ञान व्यवहार तथा चेतना एवं पूर्ववर्ती कारकों के बीच के प्रकार्यात्मक संबंध का अध्ययन करता है। प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के स्वरूप को समझने के लिए महत्वपूर्ण प्रकार्यवादियों के योगदानों पर विचार करना आवश्यक है।

## John Dewey (1859–1952)

जन्म – 1859 में अमेरिका के बर्लिंग्टन नामक स्थान में। 1884 में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में PhD. के हारवर्ड विश्वविद्यालय में विलियम जेम्स से भी शिक्षा ग्रहण किये। 1894 में वे दर्शनशास्त्र के प्राचार्य पद पर शिकागो विश्वविद्यालय आ गये और यहीं प्रकार्यवाद की संस्थापना किये। 1894 ई० में James R. Angell भी शिकागो विश्वविद्यालय में सहायक प्राचार्य के रूप में योगदान किये। डिवी ने एंजिल के सहयोग से 1894 में यहाँ प्रकार्यवाद की स्थापना किये।

1896 में डिवी ने एक लघु शोध-पत्र जिसका शीर्षक – The Reflex arc concept in Psychology का प्रकाशन किये और इसी पत्र के प्रकाशन से प्रकार्यवाद का शुभारंभ माना जाता है। इस पत्र में वे संरचनावादियों के मनोवैज्ञानिक तत्त्ववाद पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने यह मत व्यक्त किया कि मानसिक क्रियाओं को उनके तत्व या अंशों में तोड़कर नहीं बल्कि उनका अध्ययन समग्र रूप में करना चाहिए।

डिवी ने इस तथ्य पर बल डाला कि उद्दीपन तथा

अनुक्रिया के बीच जो अंतर है वह वास्तविकता पर आधारित नहीं होता, बल्कि संपूर्ण घटना में संवेदी तंत्रिका, पेशीय तंत्रिका तथा केन्द्रीय तंत्रिका द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों पर आधारित होता है। उन्होंने एक उदाहरण से प्रतिवर्त के रूप में व्यवहार की व्याख्या को अनुपयुक्त साबित करने के कोशिश किये हैं। जैसे — जब एक बच्चा दीपक को देखता है उसकी ओर आकर्षित होता है और अपनी अंगुली जला लेता है। यह व्यवहार इन पृथक घटनाओं का मात्र सरल क्रम नहीं है। इस तरह की अनुभूति के बाद उस बच्चे का प्रत्यक्षण उस दीपक के प्रति परिवर्तित हो जायेगा। बच्चा अब दीपक की ओर आकर्षित होने के बजाय उससे दूर जायेगा।

डिवी ने स्पष्ट किया है कि संवेदन का अनुभव गति या पेशीय क्रियाओं से पहले नहीं होता है, क्योंकि इन्हें एक दूसरे से अलग करना संभव नहीं है। वे व्यवहार को संपूर्णता के रूप में देखते थे जो प्राणी को वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में मदद करता है।

डिवी का यही शोध-पत्र प्रकार्यवादी मनोविज्ञान का मुख्य आधारशिला माना गया है।

## James Rowland Angell (1867 - 1949)

जेम्स एंजेल का जन्म सन् 1867 में हुआ। उनकी शिक्षा हारवर्ड विश्वविद्यालय में हुई। उनका प्रिय विषय मनोविज्ञान था। वह विलियम जेम्स को अपना गुरु मानते थे और उनके विचारों से सहमत थे। एंजेल को गुरु से भी शिक्षा ग्रहण करने का मौका मिला था। 1894 में शिकागो विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के प्राचार्य पद पर योगदान दिये। यहाँ पर वे डिवी के साथ मिलकर मनोविज्ञान में प्रकार्यवाद का प्रारंभ किये।

शिकागो विश्वविद्यालय में योगदान के बाद एंजेल A. W. Moore के साथ मिलकर एक शोध-पत्र का प्रकाशन Psychological Review, 1896 के उसी अंक में हुआ जिसमें जॉन डिवी के प्रतिवर्त चाप (reflex arc) का हुआ था।

NOTES

Scanned with CamScanner

इस शोध-पत्र में वे प्रतिक्रिया समय पर किये गये प्रयोगों से प्राप्त परिणामों पर विस्तार से व्याख्या किये थे। 1903 में वे दूसरा शोध-पत्र प्रकार्यवादी मनोविज्ञान और संरचनावादी मनोविज्ञान के संबंधों पर प्रकाशित किये। प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के बारे में उनके स्पष्ट विचारों की झलक उनके द्वारा 1906 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ में दिये गये अध्यक्षीय भाषण में मिलता है। जिसका प्रकाशन 1907 में 'The Province of Functional Psychology' शीर्षक के अन्तर्गत किया गया था। जिसमें इन्होंने प्रकार्यवादी मनोविज्ञान की तीन अवधारणाएँ बतलाई थी, जो इसप्रकार हैं —

→ प्रकार्यवाद को संरचनावाद के विपरीत बतलाया गया। संरचनावाद का मुख्य कार्य चेतन को उसके विभिन्न तत्वों में विश्लेषित करना था जबकि प्रकार्यवादियों का कार्य यह पता लगाना था कि मानसिक प्रक्रिया किस तरह संचालित होती है और इसकी उपयोगिता व्यक्तियों के लिए क्या है?

→ चेतन के मूल उपयोगिताओं का मनोविज्ञान ही प्रकार्यवादी मनोविज्ञान है। मन हमेशा प्राणी की आवश्यकताओं तथा पर्यावरण के बीच मध्यस्थता करता है। अतः वह प्राणी को पर्यावरण के साथ समायोजन में मदद करता है। जिससे प्राणी का अस्तित्व बना रह सके।

→ प्रकार्यवादी मनोविज्ञान का संबंध प्राणी तथा पर्यावरण के संपूर्ण मनोदैहिक संबंध से है। इसमें गैर-चेतन तथा आदतीय व्यवहार का भी अध्ययन किया जाता है। इस अवधारणा के अनुसार मन तथा शरीर को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता और दोनों के बीच सतत अन्तःक्रियाएँ होती रहती हैं।

एंजेल ने अपने भाषण में यह भी स्पष्ट किया था कि ये तीनों अवधारणाएँ एक-दूसरे से स्वतंत्र न होकर संबंधित हैं।

Scanned with CamScanner